Department of Pre University Education
Second PUC Public Exam Key Answers April-May 2022
Hindi -Code: 03 (NS)

I.) अ) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर ।

1) सुजान की पत्नी का नाम बुलाकी है। 1

2) घर में जो कमाता है उसीका राज होता है। 1

3) हम लोगों का परम धर्म है कि हम अपना कर्तव्य करे। 1

4) माँ मंदिर में विराज रही थी। 1

5) धर्म का व्यापारीकरण हो रहा है। 1

6) कॉलेज से प्रिन्सिपल का पत्र आया। 1

7) 'एक कहानी यह भी 'की लेखिका है मन्नू भंडारी। 1

8) विश्वेश्वरय्या का जन्म मैसूर राज्य के कोलार जिले के मुद्देनहल्ली मे हुआ। 1

9) मूसी नदी में भयंकर बाढ आती थी। 1

आ) उत्तर

10) i) जब से सजान महतो , सुजान भगत बन गया तो उसके हातों से धीरे-धीरे अधिकार छीन लिए। किस खेत में क्या बोना है ,किसको क्या देना है,किससे क्या लेना है किस भाव में क्या चीज बिकी, ऎसी-ऎसी महत्वपूर्ण बातों मे भी बुलाकी और बेटे भगत जी की सलाह नहीं ली। भगत के पास कोई जा नहीं पाता । वे ही हर मामला तय करते । गाँव भर में सुजान भगत का मान-सम्मन बढता था, लेकिन अपने ही घर में घटता जाता । 3

अथवा

ii) सुजान के कलिहानों में अनाज के ढेर थे ।सुजान भगत टोकरे में अनाज भर-भरकर देते थे । उस समय उनमें वह भिक्षुक भी था, जो आठ महीने पहले भगत के द्वार से निराश होकर लौट गया था । सुजान उससे कहता है तुम जितना चाहे उतना अनाज उठाकर ले जाओ । भिक्षुक डर जाता है , सजान खुद्द चादर फैलाकर उसे अनाज भरकर गठरी बनाता है। जब उसे उठा न पाता खुद् उसे उठाकर उसका गाँव अमोला पँहुचा देता है ।इस तरह वह भिक्षुक को संतुष्ट करता है । 3

11) मनुष्य का परम धर्म है कि सत्य बोलने को सब से श्रेष्ठ मानें और कभी झूठ न बोले, चाहे उससे कितनी ही अधिक हानि क्यों न हो। सत्य बोलने से ही समाज में हमारा सम्मान हो सकेगा। और हम आनन्दपूर्वक अपना समय बिता सकेंगे। क्योंकि सच्चे को हर कोई चाहता है, झूठे से सब घृणा करते हैं। यदि सत्य बोलना सब लोग आपना धर्म मानेंगे तो कर्तव्य पालन करने में कुछ भी कष्ट न होगा और बिना किसी परिश्रम और कष्ट के वे अपने मन में सदा संतुष्ठ और सुखी बने रहेंगे। 3

12) गंगामैय्या ने प्रदूषण के बारे में कहा कि उसे खुद पता नहीं कि यह क्यों हो रहा है? जब सारे देश का वातावरण ही प्रदूषित हो गया है तब वह कैसे बच सकती थी? लोग समझते हैं कि वह कैसे भी कर्म करे, गंगामैय्या उन्हें तार देगी। असल में प्रदूषण छुआछूत का रोग है। व्यापारी लोग दूसरों को कष्ट देते हैं फिर गंगामैय्या में डुबकी लगाकर गंगा के निर्मल जल को भी गंदा कर देते हैं। 3

13) i) मन्नू भंडारी का जन्म मध्य प्रदेश के भानपुरा में हुआ । उनका बचपन अजमेर के ब्रह्मपुरी मोहल्ले के दो मंजिल म्कान में गुजरा ।वए अपने पाँच भाई बहनों में सबसे छोटी थी । उन्होने बडी बहन सुशीला के साथ सारे खेल-खेलती थी,लंगडी टाँग, पकडम-पकडाई,गुड्ड-गुडियों के ब्याह रचाए और भाईयों के साथ गिल्ली –डंडा भी खेलती थी ।उनका रंग काला और दुबली, मरियल भी थी ।गोरा रंग पिता की कमजोरी थी । इससे उनके मनमें इन भावना पैदा कर दी जिससे नाम, सम्मान और प्रतिष्ठा पाने के बावजूद वे उबर नहीं पाई । 3

अथवा

ii) लेखिका मन्नू भण्डारी हिन्दी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल के बारे में कहती हैं कि उन्होंने ही उसे साहित्य की दुनिया में प्रवेश करवाया। शीला अग्रवाल सावित्री गर्ल्स कालेज में जहाँ मन्नू हाईस्कूल पास कर फस्ट इयर कालेज में भर्ती हुई थीं, वहाँ हिन्दी की प्राध्यापिका थीं। उन्होंने मन्नू की आदत मात्र पढ़ने को, चुनाव करके पढ़ने में बदला। खुद चुन-चुनकर किताबें दी ।पढ़ी हुई किताबों पर बहसें की ।मन्नू की साहित्यिक दुनिया शरत्-प्रेमचंद्र से बढ़कर जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा तक फैल गयी। 'सुनीता', 'शेखर एक जीवनी', 'नदी के द्वीप', 'त्याग पत्र', 'चित्रलेखा 'जैसी किताबों पर मंथन किया गया। शीला अग्रवाल ने मन्नू को देश की परिस्थितियाँ जानने, समझने के लिए न सिर्फ प्रेरित किया बल्कि देश की आजादी के लिए घर की चारदीवारी से खींचकर उसमें सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए भी जागृत किया। 3

14) मैसूर राज्य के विकास के लिए विश्वेश्वरय्या के तीन प्रमुख कार्य है कावेरी पर बाँध जो कृष्णराज सागर नाम से मशहूर है। इस बाँध के निर्माण से उद्योगों के लिए बिजली मिली। पानी सिंचाई के लिए सुविधा हुई। दूर- दूर से लोह बाँध देखने आने लगे।वृंदावन उद्यान का निर्माण करने के कारण मैसूर जैसे इन्द्रपुरी बन गहा। शासन व्यवस्था में भी कई सुधार किए। पंचायतो की व्यवस्था की। गाँव और शहरों में जनता के द्वारा प्रतिनिधि चुने गए। एक बैंक भी खोला। मैसूर राज्य में एक अलग विश्वविद्यालय भी खोला। 3

II.) अ) निम्न लिखित वाक्य किसने किससे कहा।

15) इस वाक्य को भोलाने बुलाकी से कहा। 1
16) बुलाकी ने यह वाक्य भोला से कहा। 1
17) भिक्षुक ने सुजान भगत को कहा। 1
18) एक दकियनूसी मित्र ने पिताजी से कहे । 1
19) डाँ. अंबालाल जी ने मन्नू से कहे 1
20) डाँ. अंबालाल जी ने मन्नू के पिताजी से कहे। 1

आ)ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए:

21) **प्रसंग:** इस वाक्य को 'सुजान भगत' पाठ से लिया गया है, जिसके लेखक है- प्रेमचंद 1

व्याख्या -इस वाक्य को सुजान ने अपनी पत्नी बुलाकी से कहा है। एक दिन जब गया के यात्री उसकी यहाँ ठहरे तो सुजान ने कहा कि उसकी भी बहुत दिनों से इच्छा थी कि गया जाए। बुलाकी ने अगले साल देखेंगे, हाथ खाली हो जाएगा कहा तो सुजान ने अगले साल का क्या भरोसा, धर्म के काम को टालना नही चाहिए कहते हुए ऊपर की बात कही। 2

22) **प्रसंग:** इस वाक्य को डॉ. श्यामसुन्दर दास के लिखे पाठ 'कर्तव्य और सत्यता'पाठ से लिया गया है। 1

व्याख्या : कर्तव्य के बारे में बताते हुए लेखक कह रहे हैं कि इसका आरंभ घर से ही होता है। घर में एक दूसरे के प्रति, माँ-बाप के प्रति बच्चों का, पति का पत्नी के प्रति ऐसे परस्पर कर्तव्य . होते हैं। घर के बाहर समाज के प्रति, अपने मित्र पड़ोसियों के प्रति भी हमारे कुछ कर्तव्य होते हैं ऐसे लगता है कि हमारा जीवन कर्तव्यों से ही भरा पड़ा है। 2

23) **प्रसंग:** इस वाक्य को 'गंगा मैया से साक्षात्कार' पाठ से लिया गया है जिसके लेखक है डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी। 1

व्याख्या : लेखक जब प्रश्न करते वक्त गंगामय्या से पूछते है कि चरित्र को किसने मिटाया? तब गंगामैय्या ने कहा कि सेवा करने से चरित्र बनता था। लेकिन आजकल कोई किसी की सेवा करने में विश्वास नहीं करता। लोग इतने स्वार्थी हो गए हैं कि उन्होंने सेवा रानी को भी मार दिया है। सब सिर्फ फल चाटते हैं, मेवा चाहते हैं। लोगों के चरित्र में किस तरह बदलाव आ गया है बताते हुए ऊपर का वाक्य कहा। 2

24) i) **प्रसंग:** इस वाक्य को मन्नू भंडारी के लिखे 'एक कहानी यह भी' से लिया गया है। 1

व्याख्या: मन्नू की माँ उनके पिता के ठीक विपरीत थी। वह पढ़ी-लिखी नहीं थी। धरती से ज्यादा धैर्य और सहनशक्ति थी उसमें। पिताजी की हर ज्यादती को वह सह लेती और बच्चों की हर जिद हर फरमाइश सहज भाव से स्वीकार करती। सबकी इच्छा और पिताजी की आज्ञा को पालन करने के लिए सदैव तैयार रहती। सारे बच्चों का लगाव माँ के साथ था। लेकिन चुपचाप असहाय मजबूरी में रहना, उनका त्याग वगैरा सब मन्नू के लिए कभी आदर्श नहीं रहा। 2

अथवा

ii) **प्रसंग:** इस वाक्य को मन्नू भंडारी के लिखे 'एक कहानी यह भी' से लिया गया है। 1

व्याख्या: एक दिन शाम को जब कॉलेज के विद्यार्थी चौराहे पर भाषणबाजी कर रहे थे तब अजमेर के सबसे प्रतिष्ठित और सम्मानित डॉ. अंबालाल ने वह सुनकर मन्नू के पिताजी के पास आकर उसकी तारीफ करने लगे कि क्या तुम घर में बैठे हो – यू रिअली मिस्ड समथिंग। उन्होंने मन्नू के पिताजी को बधाई दी तब पिताजी का संतोष गर्व में बदलता जा रहा था। 2

iii) अ) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर

25) रैदास राम नाम की रट लगाए हुए है। 1

26) रैदास के अनुसार नेकी से कमाया धन कभी निष्फल नही जाता। 1

27) गोपिकाएँ अपने आपको भाग्यशालिनी समझ रही है। 1

28) कृष्ण अंतर की बात जाननेवाले है। 1

29) जिन आँखों से दूसरों का दुःख देखकर आँसू बहते है । 1
30) देखनेवालों को वह सुंदर दिखे इसलिए उसे सुंदर दिखना है। 1
31) कवि नरेन्द्र शर्मा कायर न बनने का संदेश देते है। 1
32) वृक्ष की पगड़ी फूल-पत्तीदार है। 1
33) हवा को धुंआ हो जाने से | 1

आ) उत्तर लिखिए:

34) रैदास अपने आपको राम के प्रति समर्पित कर कह रहे है कि प्रभु तुम और मैं अलग कैसे है? हम तो एक दूसरे में समा गए है। जहाँ आप हो वहाँ मैं हूँ। हम तो एक दूसरे में समा गए है। जहाँ आप हो वहाँ मैं हूँ। रामनामकी रट से अब मैं कैसे छुटकारा पाऊँ? हे प्रभु तुम चंदन की तरह हो और मैं पानी। मेरे अंग-अंग में तुम्हारी खुशबु समा गई है। हम दोनों अलग कैसे हो सकते है? प्रभुजी तुम धने जंगल हो और मैं जंगल का मोर हूँ। जंगल को छोड मोर कहाँ जा सकता है? जैसे चकोर पंछी को चाँद लुभाता है वैसे ही तुम मुझे लुभाते हो। हे प्रभु तुम दीपक और मैं बाती हूँ जो दिन-रात जलती रहती है। और तू प्रकाश देता रहता है। है प्रभु, तुम मेरे स्वामी हो और मैं तुम्हारा दास हूँ रैदास तुमसें इसतरह जुड़ा हुआ है। रैदास तुम्हारा ऐसा भक्त है। 3

35) कवयित्री महादेवी कहती है – जीवन की सार्थकता परिस्थितियों से डटकर मुकाबला करने में है न कि पलायन करने में। उन आँखों को हम सुन्दर क्यों कहे जो दूसरों का दुःख-दर्द देखकर आँसूओं से भर न जाए। वह प्राण ही क्या जो दूसरों की पीड़ा से न तडपे। जीवन की सार्थक ता संघर्ष करने में है, हर तरह के वेदना से सामना करने में है। 3

36) बेटी रंगीन कपड़ों को ठुकराते हुए अपनी माँ से कहती है कि वे कपड़े उसे मिट्टी में खेलने नहीं देते। वे खेलने के आनंद से वंचित रह जाती है। ये कपड़े दूसरों के लिए भले ही सुंदर दिखाई दें पर मेरे लिए नहीं। सोने के गहने मुझे तकलीफ़ देते हैं। इस तरह ये मुझे बंधन के समान लगते हैं। 3

37) 'कायर मत बन' कविता में कवि नरेन्द्र शर्मा हमें संदेश देते हैं कि कुछ भी बन, बस कायर मत बन। मानवता को कभी मत छोड़ना। मूर्ख वैरी जब ललकारता है तो उसे पीठ मत दिखाना, उसके सामने कभी घुटने मत टेकना। प्यार से समझाने का प्रयत्न करो, जब न सुने तो उसे सबक सिखा दो। कायरता प्रतिहिंसा से भी अधिक अपावन है। दुष्ट के सामने आत्मसमर्पण नहीं करना चाहिए। मानवता को ज्यादा महत्व देते हुए कायरता को छोड़कर, धैर्य और साहस से जिन्दगी में आगे बढ़ना चाहिए। 3

38) कवि कुँवर नारायण जी अबकी बार घर लौटे तो देखा कि वह बूढ़ा चौकीदार वृक्ष घर के दरवाजे पर नहीं है। वे बहुत उदास हो जाते हैं, उसकी यादों में खो जाते हैं। उसका शरीर पुराने चमड़े का बना था। वह बहुत ही मजबूत था। झुर्रियोंदार खुरदरा उसका तन मैला कुचैला था। उसकी एक सूखी डाली राइफिल सी थीं। फूल-पत्तीदार पगड़ी धारण किया वह वृक्ष बहुत ही सालों से स्थिर मजबूत ढंग से खड़ा था। धूप में, बारिश में, गर्मी में, सर्दी में अर्थात् सभी मौसमों में हमेशा चौकन्ना होकर घर की रखवाली करता था। कवि और उसके बीच एक प्रकार से दोस्ती हो गयी थी। उसकी ठंडी छाया में कुछ पल बैठकर ही कवि घर के अंदर प्रवेश करते थे। 3

इ) संदर्भ भाव स्पष्ट

39) i) **प्रसंग:** प्रस्तुत पक्तियाँ रैदास के लिखे 'रैदासबान' से ली गई है। 1

व्याख्या: यहाँ परिश्रम का महत्व बताते हुए रैदास कह रहे है सब को परिश्रम कर जीवन यापन करना चाहिए। ना ही कोई आलसी हो न कोई कामचोर। इस जिंदगी से वही पार होगा जिसने श्रम का, मेहनत का महत्व जान लिया हो। परिश्रम में धोखा न हो इसलिए आगे वे कहते है कि नेकी से जो कमाई करोगे तो कुछ भी निष्फल न होगा। 2

विशेषता : इमानदारी बडी चीज है, जीवन में सफलता उसीसे मिलेगी। 1

अथवा

ii) **प्रसंग:** सूरदास कृष्ण के रुपसौंदर्य का वर्णन कर रहे है। (सूरदास के पद)
1

व्याख्या : गोपिकाएँ कह रही है जमुना नदीके किनारे कृष्ण को देखा। उन्होने मोर मुकुट पहना है, उनके कान के कुंडल मकराकृत है, शरीर पर चंदन है और उन्होने पीला वस्त्र पहना है ऐसे कृष्ण का रूप देखकर आँखोंकी प्यास बुझ गई, आँखे तृप्त हुई। हृदय की आग बुझ गई। प्रेम में पागल गोपिकाओं का हृदय भर आया है, उसके मुख से शब्द नही निकल रहे है। नदी के किनारे खडे कृष्ण से मिलने जा रही नारियाँ लज्जा से गड गई है। 2

विशेषता : सूरदास कह रहे है कृष्ण प्रभु तो अंर्तज्ञानी है। वे इन गोपिकाओं की मनस्थिति को समझ सकते है। 1

40) i) **प्रसंग:** 'गहने' कविता से ली गई है। कवि - कुवेंपु (अनु: डॉ.एम.विमला)) 1

व्याख्या : माँ और बेटी के बिच, का यह संवाद है। बेटी माँ से कह रही है कि मुझे पाकर तुम माँ बन गइ हो तुम्हारा यह मातृत्व ही तुम्हारे लिए एक गहना है ना? माँ का वात्सल्य, प्रेम तुम्हारे चेहरे पर झलकता है। मैं अपने मुग्ध बचपन में निरागस, निष्पाप, सी, ऐसे ही सुंदर हूँ। जब में तुम्हारा गहना हूँ और तुम मेरा गहना हो तो और गहने पहन कर अपने को और सुंदर बनाने की क्याजरुरत है माँ? हम तो ऐसे ही सुंदर है जैसे भगवान ने हमे बनाया है। हमे गहनों की क्या जरूरत है माँ? 2

विशेषता : माँ और बेटी की ममता एंव वात्स्ल्य का विचार हैं । 1

अथवा

ii) **प्रसंग:** ' कायर मत बन'कविता से ली गई है। कवि नरेन्द्र शर्मा | 1

व्याख्या : कुछ भी बन बस कायर मत बन कवि कह रहे है अगर कोई दृष्ट, क्रूर मनुष्य तुमसे टक्कर लेने खडा हो जाए तो उसकी ताकत से डरकर तू पीछे मत हट। पीठ दिखाकर भाग न खडा हो। बुद्ध – मदर तेरेसा जैसे कई महापूरुष/स्त्रियाँ होकर गई है जिन्होने अपने प्यार और सेवाभाव से दृष्टों को भी जीत लिया है। क्योंकि हिंसा का जवाब प्रतिहिंसा से देना भी दुर्बलता है लेकिन फिर भी कायरता तो उससे भी अपवित्र है। इसलिए कुछ भी बन लेकिन कायर मत बन। 2

विशेषता : कवि कयरता को मौत और वीरता को जीत कहते है । 1

अथवा

iii) **प्रसंग:** यह पक्तियाँ कवि कुंवर नारायण के लिखे कविता 'एक वृक्ष की हत्य' से लिया गया है। 1

व्याख्या : जहाँ तक कवि के याद है बचपन से वे उस पेड को वैसे ही खडा पाते है। घूप हो, बारिश हो, गर्मी हो या सर्दी। खाकी वर्दी पहने चौकने से चौकीदार की तरह वह खडा दिखता। कवि उसे अपने दोस्त की तरह मानते है। कविने उसके साथ एक रिश्ता सा बना लिया था। जैसे वह दोस्त उससे बाते करता, पूछता कौन और कवि कहते तुम्हारा दोस्त। पलभर के लिए उस पेड की छाया में वह बैठ जाता और ऐसे सकून को महसूस करता जैसे वह अपने दोस्त के पास बैठा हो। 2

विशेषता : कवि प्रकृति का महत्व बताए है । 1

iv) अ) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर:

41) मिश्रानी को छोटी बहू बेला ने काम से हटा दिया। 1

42) मूलराज के मँझले बेटे का नाम है कर्मचंद। 1

43) व्यक्ति बुद्धि और योग्यता से बड़ा होता है। 1

44) बहू पढ़ी लिखी है, उसका समय न बरबाद करे और सही आदर दे। 1

45) भारवि के माँ का नाम सुशीला है। 1

46) कवि समय पर शासन करता हैं। 1

47) भारती ने भारवि को मालिनी तट पर देखा था। 1

48) प्रतिशोध एकांकी के एकांकीकार – डॉ. रामकुमार वर्मा | 1

आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर

49) i) इन्दु को अपनी भाभी बेला पर क्रोध इसलिए आया क्योंकि उसने घर की पुरानी नौकरानी रजवा को काम से निकाल दिया था। बेला बात-बात पर अपने मायके के बारे में बड़ी ऊँची बातें और प्रशंसा अधिक करती थी। हर बात पर अपने घर की बड़ाई करती थी। उसे अपने ससुराल की कोई भी चीज़ पसंद नहीं आती थी। यहाँ के लोगों का खाना-पीना, पहनना-ओढ़ना कुछ भी पसंद न आता था। इस बात से इन्दू को अपनी भाभी बेला पर क्रोध आया। 5

अथवा

ii) बेला अपने मायके वालों को ही बड़ा समझती है। सुनने पर दादाजी ने बड़प्पन बाहर की वस्तु नहीं बड़प्पन मन का होना चाहिएकहा। अगर किसीको घृणा के बदले घृणा ही दे तो उसमें कोई महानता नहीं। महानता तो घृणा के बदले स्नेह/प्रेम देना होता है। महानता किसी से मनवाई नहीं जाती, अपने व्यवहार से अनुभव करायी जा सकती है। दादाजी यहाँ ठूँठ व्रुक्ष का उदाहरण देते हुए कहते है कि जब तक अपनी शाखाओं में पत्ते उगकर ,सुखद अनुभव लाए ,उसे ही बडपन कह सकते है । 5

अथवा

iii) बेला अमीर बाप की एकलौती बेटी थी। वह बड़े, अच्छे घर में रहती थी। घर में नौकर-चाकर थे। वह पढ़ी-लिखी थी, उसे पढ़ने का शौक था। काम करने की, इतने सारे लोगों के साथ रहने की उसको आदत नहीं थे। कमरे में रखा टूटा-फूटा फर्निचर उसे पसंद नहीं आया। दादाजी ने सबके लिए मँगाए हुए मलमल के थान और रजाई के अबरे उसे पसन्द नहीं आए। वह नए विचारवाली थी। सब उसके बारे में

बात करते, उसपर हँसते जो उसे अच्छा नहीं लग रहा था। वह आज़ादी चाहती थी, दूसरों का हस्तक्षेप उसे पसंद नहीं था। 5

50) i) पिता अपने बेटे भारवि का पांडित्य देखकर बहुत ही प्रसन्न हुए है। वह जानते हैं कि कोई भी भारवि को नहीं हरा सकता। भारवि संसार का सर्वश्रेष्ठ महाकवि है। दूर-दूर के देशों में उसकी समानता करने का किसी में साहस नहीं। लेकिन वे चाहते थे कि भारवि और भी अधिक पण्डित और महाकवि बने। लेकिन आजकल भारवि में अहंकार आ गया है। अहंकार के कारण उसकी उन्नति नहीं होगी। इसलिए समय-समय पर वे उसे मूर्ख और अज्ञानी कहते हैं। उन्होंने सब के सामने भारवि का अपमान भी किया। 5

अथवा

ii) महाकवि भारवि एकांकी के नायक है।संस्कृत विद्वान श्रीधर और सुशीला का बेटा है।वह एक महान कवि भी है उसने कई विद्वानों और पंडितों को पराजित किया था। इससे प्रभावित होकर अहंकारी बनता है । पिताजी उसे पंडितों के सामने ताड़ना करते है इससे भारवि का उमंग रसातल में चली गई ।पिताजी से बदला लेना चाहता है प्रतिशोध लेना चाहता है जब उसे पता चलता है कि पिताजी उसके उन्नति के लिए ताडना किए थे । प्रायश्चित करना चाहता है उसके लिए ससुराल में जाकर सेवा करने के लिए और झूठ के भोजन खाने के लिए कहते हैं ।भारवि दंड भोगने के लिए ससुराल जाता है बाद में अपने अहंकार को नाश करते हुए " किरातार्जुनीयम् " महाकाव्य की रचना करके महाकवि बनता है। 5

अथवा

iii) भारवि के पिता श्रीधर को पता था और गर्व भी था कि भारवि संसार का श्रेष्ठ महाकवि है। दूर दूर के देशों में उसकी समानता करनेवाला कोई नहीं है। लेकिन धीरे-धीरे भारवि के मन में अहंकार भर गया। वे उसके अहंकार को मिटाना चाहते थे क्योंकि अहंकार और अभिमान से किसी की उन्नति नहीं होती यह वे जानते थे। बार-बार वे उसे मूर्ख और अज्ञानी कहते थे लेकिन उनके मन में पुत्र के प्रति मंगल कामना छिपी थी। वे चाहते थे कि उसका पुत्र और विद्वान और यशस्वी बने। अहंकारी नहीं। क्योंकि अंह्कार उन्नति में बाधक है । पिताजी भारवि की उन्नति केलिए जब ताडना करने के बाद भारवि पिता के प्रति प्तिशोध की ज्वाला में घुलकर बाद में उनके पित्रु वात्सल्य को समझने के बाद सही मायने में अपनी जीवन को सुधारता है । यही विचार इस नाटक में महत्वपूर्ण है । 5

V. अ) वाक्य शुद्ध कीजिए:

51) i) सुजान ने एक पक्का कुँआ बनवाया। 1

ii) मुझसे कल बहुत बड़ी भूल हुई। 1

iii) उसे दिखावा नहीं रुचता है। 1

iv) मनुष्य का जीवन कर्त्तव्य से भरा पड़ा है। 1

आ) रिक्त स्थान

52) i) सत्य 1
ii) कर्त्तव्य 1
iii) घृणा 1
iv) सम्मान 1

इ) निम्नलिखित वाक्यों को सूचनानुसार बदलिए

53) i) उसने मेरी किताब की चोरी की। 1
ii) सुजान के खेत में कंचन बरसेगा 1
iii) हमारा जीवन सदा अनेक कार्यों में व्यस्त रहता है। 1

ई) मुहावरे

54) i) अहं उतारना 1
ii) बेईज्जत करना 1
iii) बहुत क्रोधित होना 1
iv) चकित होकर देखना 1

उ)अन्य लिंग रूप लिखिए।

55) i) आदमी-औरत 1
ii) भिखारी – भिखारिन 1
iii) भगवान – भगवती, 1

ऊ)अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए:

56) i) सहपाठी 1
ii) र्निबल 1
iii) निडर 1

ए)उपसर्ग

57)i) धर्म – अधर्म 1
ii) मान – सम्मान 1

ऐ) प्रत्यय

58) i) मनुष्यता – मनुष्य + ता 1
ii) महत्वपूर्ण – महत्व + पूर्ण 1

अ) 59) निंबध रचना 5

प्रस्तावना – विषय का अर्थ लिखना ।
पूर्ण विवरण – विषय के प्रति पूर्ण रूप से विवरण देना। उपयोग अनुप्रयोग सभी विचारों के प्रति विवरण देना ।

उपसंहार –विषय के प्रति के अपना उद्देश्य प्रकट करना।

अथवा

ii) . छात्रावास से अपने पिता को एक पत्र

शारदा छात्रावास
मेंगलूर
26 जून 2014

पूज्य पिताजी,
सादर प्रणाम,

मैं यहाँ सकुशल हूँ आशा है घर में भी सब लोग सकुशल होगें।
'यहाँ छात्रावास में मैंने बहुत से दोस्त बना लिए है। हम एक दूसरे की मदत करते है, कॉलेज भी साथ–साथ जाते है। आपको पता है मेरी रुम मेट मेरी ही कक्षामें है जिसके कारण हम पढाई भी साथ–साथ करते है। अब यहाँ का खाना भी मुझे कुछ अच्छा लगने लगा है। अप और माँ को भी कहिए. की मेरी फिक्र मत कीजिए। हाँ, लेकिन मैं आप सब को बहुत याद करती हूँ। लेकिन मैं आप सब को बहुत याद करती हूँ। बंटी का क्या हाल है? पढता है कि नही ठीक है, पपा, मम्मी और बंटी को मेरा प्यार।

आपकी बेटी
क.ख.ग

आ) अनुच्छेद के उत्तर

60) i) बुलेट या शिन्कासेन 1
ii) 16 डब्बे की गाड़ी है। 1
iii) हर 1300 1
iv) इस रेल में 40 मोटर जनरेटर लगे होते हैं। 1
v) 8600 1

इ) हिन्दी में अनुवाद

61) i) गोपाल पढाई में अच्छा है । 1
ii) माँ हमेशा अपने बच्चों से प्यार करती हैं । 1
iii) जंगली जानवर बहुत खतरनाक होते हैं । 1
iv) भारत में कई भाषाएँ प्रचलित है। 1
v) भारत खेतीप्रधान देश है। (क्रुषी प्रधान) 1
vi) हमे सब धर्मो का आदर करना चाहिए। 1
vii) विद्यार्थी जीवन ही जीवन का सुनहरा काल होता है। 1
viii) सरला में बहुत कलाकौशल्य है। (प्रतिभान्वित) 1

****